

## 9. उच्च शिक्षा में सूचना प्राप्ति व्यवहार एवं सूचना स्रोतों का उपयोग: एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. अंजनी सराफ<sup>1</sup>, विश्वनाथ प्रताप सिंह<sup>2\*</sup>

<sup>1</sup> असिस्टेंट प्रोफेसर, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर

<sup>2</sup> रिसर्च स्कॉलर, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर

### सारांश

डिजिटल युग के प्रादुर्भाव के साथ ही उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के सूचना अन्वेषण एवं प्राप्ति के दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन आया है। इस व्यवस्थित समीक्षा का मुख्य उद्देश्य वर्ष 1984 से 2026 के मध्य प्रकाशित 34 विभिन्न शोध-अध्ययनों के आधार पर उच्च शिक्षा संस्थानों में 'सूचना प्राप्ति व्यवहार' तथा 'सूचना स्रोतों' के उपयोग का गहन विश्लेषण करना है। विषयगत एवं अंतर्वस्तु विश्लेषण के आधार पर प्राप्त परिणाम यह दर्शाते हैं कि वर्तमान में डिजिटल संसाधन, ऑनलाइन डेटाबेस तथा सर्च इंजन शैक्षणिक उपयोगकर्ताओं के मध्य प्राथमिक सूचना स्रोत बन चुके हैं; यद्यपि, पारंपरिक मुद्रित स्रोतों की प्रासंगिकता अब भी अक्षुण्ण है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि सूचना साक्षरता कौशल, उन्नत डिजिटल अवसंरचना और सुदृढ़ पुस्तकालय सेवाएँ उपयोगकर्ताओं के सूचना खोज व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। यह शोध अकादमिक पुस्तकालयों को उपयोगकर्ता-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने, डिजिटल संग्रह को समृद्ध करने तथा सूचना साक्षरता कार्यक्रमों को बढ़ावा देने का सुझाव देता है।

**मुख्य शब्द :** सूचना प्राप्ति व्यवहार, शैक्षणिक पुस्तकालय, सूचना स्रोत, उच्च शिक्षा, डिजिटल संसाधन, सूचना साक्षरता।

### 1. प्रस्तावना

ज्ञान-आधारित समाज में सूचना किसी भी प्रकार के शैक्षिक एवं बौद्धिक विकास की आधारशिला है (सतीजा, 2013)। उच्च शिक्षा संस्थानों में ज्ञान के सृजन, प्रसार और उपयोग की प्रभावशीलता काफी हद तक प्रासंगिक व विश्वसनीय सूचना की सुलभता पर निर्भर करती है। इस परिप्रेक्ष्य में, विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों के सूचना प्राप्ति व्यवहार को समझना अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। 'सूचना प्राप्ति व्यवहार' एक ऐसी व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसमें उपयोगकर्ता अपनी सूचना आवश्यकता की पहचान करता है, तदनु रूप जानकारी की खोज करता है और अंततः उसका उपयोग करता है (विल्सन, 2000)। ऐतिहासिक रूप से, शैक्षणिक पुस्तकालय विद्वत्तापूर्ण सामग्री के प्रमुख केंद्र रहे हैं, किंतु सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के त्वरित विकास ने पुस्तकालयों को 'भौतिक' से 'डिजिटल' स्वरूप में



रूपांतरित कर दिया है (मंजुनाथ एवं शिवलिंगैया, 2003)। इस तकनीकी बदलाव ने उपयोगकर्ताओं को पारंपरिक स्रोतों के साथ-साथ ई-जर्नल्स, ऑनलाइन डेटाबेस और इंटरनेट आधारित संसाधनों की ओर उन्मुख किया है। प्रस्तुत अध्ययन उपलब्ध साहित्य की व्यवस्थित समीक्षा के माध्यम से इसी परिवर्तित सूचना प्राप्ति व्यवहार, उभरती प्रवृत्तियों तथा भावी चुनौतियों का समालोचनात्मक विश्लेषण करता है।

## 2. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. सूचना प्राप्ति व्यवहार की अवधारणा एवं इससे जुड़े सैद्धांतिक दृष्टिकोणों का समालोचनात्मक परीक्षण करना।
2. उच्च शिक्षा के उपयोगकर्ताओं द्वारा प्रयुक्त होने वाले प्रमुख (मुद्रित एवं डिजिटल) सूचना स्रोतों की पहचान करना।
3. पूर्ववर्ती शोधों के निष्कर्षों का समेकन करते हुए सूचना उपयोग में उभरती प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना।
4. शैक्षणिक उपयोगकर्ताओं द्वारा सूचना प्राप्ति में अनुभव की जाने वाली मनोवैज्ञानिक एवं तकनीकी चुनौतियों की पहचान करना।
5. शैक्षणिक पुस्तकालयों की सेवाओं को अधिक प्रभावी बनाने हेतु रणनीतिक सुझाव प्रस्तुत करना।

## 3. शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में 'व्यवस्थित साहित्य समीक्षा' पद्धति का अवलंबन किया गया है। यह अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। प्रासंगिक साहित्य का संकलन प्रतिष्ठित पीयर-रिव्यूड जर्नल्स, सम्मेलनों की कार्यवाहियों और गूगल स्कॉलर, रिसर्च गेट, स्कोपस व वेब ऑफ साइंस जैसे शैक्षणिक डेटाबेस से किया गया है। खोज को लक्षित बनाने हेतु "सूचना प्राप्ति व्यवहार", "शैक्षणिक पुस्तकालय", "सूचना स्रोत" जैसे मुख्य शब्द का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में 1984 से 2026 के मध्य प्रकाशित कुल 34 शोध-पत्रों को शामिल किया गया है एवं संकलित साहित्य का विषयगत विश्लेषण किया गया है।

## 4. विषयगत विश्लेषण

विगत दशकों में सूचना प्राप्ति व्यवहार के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन हुए हैं, जिनका विभिन्न विद्वानों ने व्यापक अध्ययन किया है। वर्तमान समीक्षा के आधार पर प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं:

**4.1 मुद्रित बनाम डिजिटल संसाधनों की ओर झुकाव:** वर्तमान में स्नातक एवं शोध स्तर के विद्यार्थी सुगमता के कारण ई-जर्नल्स और डेटाबेस को अधिक प्राथमिकता दे रहे हैं (अहमद एवं अन्य, 2025; हनीफा और जॉर्ज, 2010)। हालाँकि, चिकित्सा (तिब्बिया कॉलेज) जैसे कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में आज भी पाठ्यपुस्तकों और मुद्रित जर्नलों पर निर्भरता देखी गई है (फातिमा एवं अहमद, 2008)।

**4.2 सर्च इंजन और 'सूचना अधिभार':** 'गूगल' आज के शैक्षणिक जगत का सबसे प्रमुख सूचना स्रोत बन चुका है (नदज़िर एवं अन्य, 2015)। छात्र पुस्तकालय डेटाबेस की जटिलताओं से बचने के लिए साधारण कीवर्ड्स के माध्यम से वेब सर्च को वरीयता देते हैं, जो बहुधा 'सूचना अधिभार' और भ्रामक जानकारी की समस्या को जन्म देता है (शुहिदान एवं अन्य, 2020)।

**4.3 डिजिटल साक्षरता की अपरिहार्यता:** डिजिटल साक्षरता का सीधा संबंध उपयोगकर्ता की संतुष्टि और सूचना की गुणवत्ता से है (पवार और खरे, 2026)। ई-सूचना साक्षरता कार्यक्रमों से शिक्षकों और छात्रों की प्रामाणिक सूचना खोजने एवं उसका मूल्यांकन करने की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है (बिलावर एवं पुजार, 2016)।

**4.4 डिजिटल परिवेश एवं इंटरनेट का प्रभाव:** शशि कांत खरे एवं सहयोगियों (2007) तथा मोहम्मद हनीफा (2010) के अध्ययनों से ज्ञात होता है कि इंटरनेट आज पीएच.डी. शोधार्थियों एवं उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए प्रमुख सूचना स्रोत बन गया है। अधिकांश विद्यार्थी 'गूगल' को अपने प्राथमिक खोज उपकरण के रूप में उपयोग करते हैं। हनीफा (2010) के अनुसार, विज्ञान के विद्यार्थी मुद्रित संसाधनों की अपेक्षा डिजिटल संसाधनों का अधिक उपयोग करते हैं।

**4.5 मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक आयाम:** सूचना प्राप्ति महज एक तकनीकी कार्य नहीं है, यह एक मानसिक प्रक्रिया भी है। कुहलथाउ के मॉडल का समर्थन करते हुए ऑर्लु (2016) स्पष्ट करते हैं कि खोज प्रक्रिया के प्रारंभिक चरण में शोधार्थी प्रायः 'अनिश्चितता' और 'निराशा' का अनुभव करते हैं।

**4.6 विषयगत भिन्नताएँ:** विभिन्न संकायों के उपयोगकर्ताओं का व्यवहार भिन्न होता है। जहाँ विज्ञान और तकनीकी के शोधार्थी नवीनतम जर्नलों और इंटरनेट पर अधिक निर्भर हैं, वहीं कला एवं मानविकी के शोधार्थी ऐतिहासिक

अभिलेखों और मुद्रित पुस्तकों को अधिक प्रासंगिक मानते हैं (रुबिनिच, 2014; न्वोने, 2019; खरे एवं अन्य, 2007)

|

**4.7 मिलेनियल एवं स्नातक विद्यार्थियों का व्यवहार:** शमिला मोहम्मद शुहिदान एवं सहयोगियों (2020) के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मिलेनियल विद्यार्थी सूचना के लिए इंटरनेट पर अत्यधिक निर्भर हैं, किन्तु वे प्रायः “सूचना अधिभार” तथा सूचना के मूल्यांकन में कठिनाइयों का अनुभव करते हैं। मस्लिंदा मोहम्मद नदज़िर (2015) के अध्ययन के अनुसार, स्नातक विद्यार्थी शैक्षणिक कार्यों हेतु गूगल सर्च एवं विभिन्न डिजिटल टूल्स का व्यापक उपयोग करते हैं।

**4.8 अकादमिक पुस्तकालयों की परिवर्तित भूमिका:** आधुनिक पुस्तकालय अब मात्र पुस्तकों के भंडार नहीं रहे; वे “डिजिटल गेटकीपर” के रूप में स्थापित हो चुके हैं (लाकोविच, 2014; मंजुनाथ, 2003)। यू.जी.सी.-इन्फोनेट जैसे कंसोर्टियम ने ई-संसाधनों की पहुँच को आसान बनाया है, किन्तु उपयोगकर्ताओं को अभी भी निरंतर प्रशिक्षण की आवश्यकता है (निकम एवं प्रमोदिनी, 2007)।

## 5. शोध अंतराल

पूर्ववर्ती साहित्य की समीक्षा से निम्नलिखित शोध अंतरालों की पहचान की गई है:

**5.1 कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव:** अधिकांश मॉडल (विल्सन, एलिस) पारंपरिक खोज प्रणालियों पर आधारित हैं। वर्तमान में चैट जी पी टी या जैमिनी जैसे उपकरणों ने सूचना प्राप्ति व्यवहार को कैसे बदला है, इस पर अनुभवजन्य शोध का अभाव है।

**5.2 दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक प्रभाव:** सूचना अधिभार के कारण उत्पन्न होने वाले मानसिक तनाव और शैक्षणिक प्रभाव पर गहन विश्लेषण की आवश्यकता है।

**5.3 डिजिटल विभाजन :** ग्रामीण और शहरी शिक्षण संस्थानों के मध्य इंटरनेट की गति, डिजिटल संसाधनों की सुलभता और साक्षरता कौशल में विद्यमान अंतर पर तुलनात्मक शोध की कमी है।

**5.4 सूचना की प्रामाणिकता :** ‘फेक न्यूज़’ के इस युग में छात्र किसी भी सूचना की प्रामाणिकता की जाँच कैसे करते हैं, इसके लिए कोई अद्यतन व्यवहार मॉडल विकसित नहीं किया गया है।

**5.5 विषय-विशिष्ट दीर्घकालिक अध्ययन:** अधिकांश अध्ययन एक समय विशेष पर आधारित होते हैं। किसी एक विद्यार्थी के स्नातक स्तर से लेकर पीएच.डी. स्तर तक सूचना प्राप्ति व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों का दीर्घकालिक अध्ययन अभी भी सीमित है।

## 6. प्रमुख निष्कर्ष एवं विवेचना

यह समीक्षात्मक अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उच्च शिक्षा में डिजिटल रूपांतरण अब एक स्थायी यथार्थ बन चुका है। विद्यार्थियों और शिक्षकों की सूचना आवश्यकताएं और उन्हें प्राप्त करने के तरीके निरंतर बदल रहे हैं। अतः शैक्षणिक संस्थानों और पुस्तकालयों को चाहिए कि वे स्वयं को केवल संसाधन-प्रदाता तक सीमित न रखें, बल्कि सक्रिय 'सूचना साक्षरता कार्यक्रमों' का आयोजन करें। इसके अतिरिक्त, भविष्य के शोधों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सूचना प्राप्ति व्यवहार को केंद्र में रखा जाना चाहिए, क्योंकि यही आगामी शैक्षणिक अनुसंधान की दिशा निर्धारित करेगा।

अध्ययन यह रेखांकित करता है कि डिजिटल संसाधनों ने सूचना प्राप्ति को तीव्र और सुलभ अवश्य बनाया है, लेकिन 'सूचना अधिभार' और 'गुणवत्ता मूल्यांकन' जैसी जटिल चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। यद्यपि जेन-वाई (1981 और 1996 के बीच जन्मी पीढ़ी) और जेन-जेड (1997 और 2012 के बीच जन्मी पीढ़ी) पीढ़ियों को तकनीकी रूप से "विशेषज्ञ खोजकर्ता" माना जाता है, किन्तु प्रामाणिक एवं वैज्ञानिक सूचना को विश्लेषित करने में उनकी दक्षता अभी भी सीमित है। अतः 21वीं सदी में एआई और उन्नत डिजिटल परिवेश के संदर्भ में पारंपरिक सूचना प्राप्ति मॉडलों (विल्सन, एलिस) के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है।

## 7. सुझाव :

- 7.1 पुस्तकालयों को केवल सामान्य उन्मुखीकरण तक सीमित न रहकर, उपयोगकर्ताओं के लिए सूचना साक्षरता और ई-संसाधनों के उपयोग पर लक्षित प्रशिक्षण कार्यशालाएं और सेमिनार आयोजित करने चाहिए। शिक्षकों को भी ई-सूचना साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षित किया जाना चाहिए।
- 7.2 उपयोगकर्ताओं (विशेषकर शोधार्थियों) को विविध खोज विधियों, अवांछित सूचनाओं को फिल्टर करने, और प्रामाणिक सूचनाओं के आलोचनात्मक चयन व विश्लेषणात्मक कौशल में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
- 7.3 पुस्तकालयों को सूचना साक्षरता कार्यक्रमों के लिए 'एम्बेडेड लाइब्रेरियन प्रोग्राम' जैसी पहल अपनानी चाहिए, जहाँ लाइब्रेरियन अकादमिक संकाय के साथ मिलकर छात्रों का मार्गदर्शन कर सकें। अनुदेशात्मक कार्यक्रमों को विभिन्न विषयों की संस्कृति और आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किया जाना चाहिए।

- 7.4 पुस्तकालयों को उच्च-प्रदर्शन वाले हार्डवेयर, अत्याधुनिक कंप्यूटर अवसंरचना और पूर्ण इंटरनेट एक्सेस प्रदान करना चाहिए। इसके साथ ही इंटरनेट की गति और कनेक्टिविटी में सुधार किया जाना चाहिए।
- 7.5 ई-संसाधनों की पहुंच को केवल पुस्तकालय तक सीमित न रखकर, छात्रों और शोधकर्ताओं के निवास या हॉस्टल तक लैन या रिमोट एक्सेस के माध्यम से उपलब्ध कराया जाना चाहिए। कृषि जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में ई-कंसोर्टिया मॉडल स्थापित करने पर जोर दिया जाना चाहिए।
- 7.6 युवा उपयोगकर्ताओं के बदलते सूचना प्राप्ति व्यवहार को देखते हुए पुस्तकालयों को स्मार्टफोन और आईपैड जैसे मोबाइल उपकरणों के लिए नई सेवाएँ विकसित करनी चाहिए। पुस्तकालयों को पारंपरिक सेवाओं के साथ-साथ लोकप्रिय वेब 2.0 सेवाओं का संयोजन करना चाहिए।
- 7.7 मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक दोनों संसाधनों को एकीकृत करने वाले 'सूचना पहुँच मॉडल' को अपनाना चाहिए। डिजिटल पुस्तकालयों में सूचना की गुणवत्ता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि डिजिटल संसाधन अद्यतन, सुव्यवस्थित और शैक्षणिक पाठ्यक्रम के साथ एकीकृत हों।
- 7.8 पुस्तकालय प्रणालियों के उपयोग में आसानी और डिजिटल संसाधनों की सुलभता को बढ़ाया जाना चाहिए। उपयोगकर्ताओं के त्वरित पहुँच हेतु पुस्तकालय वेबसाइट के होम पेज को अधिक प्रासंगिक बनाया जाना चाहिए।
- 7.9 पुस्तकालय कर्मियों को अपनी तकनीकी क्षमताओं को निरंतर उन्नत करना चाहिए। उन्हें सूचना खोज के मानदंडों को समझना चाहिए ताकि वे नई प्रणालियों को विकसित कर सकें और सेवाकालीन कार्यक्रम की योजना बना सकें।
- 7.10 सूचना खोज के दौरान उपयोगकर्ता अक्सर अनिश्चितता और चिंता का अनुभव करते हैं। पुस्तकालय प्रणालियों को इस प्रकार अभिकल्प किया जाना चाहिए कि वे सकारात्मक भावनाओं को विकसित करें और नकारात्मक भावनाओं को कम करें। पुस्तकालयाध्यक्ष को उपयोगकर्ताओं के लिए एक उचित खोज वातावरण और व्यक्तिगत सहायता प्रदान करनी चाहिए।
- 7.11 पुस्तकालय सेवाओं और संसाधनों को बढ़ावा देने के लिए संगोष्ठियों, व्याख्यान कार्यक्रमों और कार्यशालाओं की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके अलावा, उपयोगकर्ताओं से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया (जैसे फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग) का प्रभावी उपयोग किया जाना चाहिए।

7.12 पुस्तकालयों को ऐसे मार्गदर्शन उपकरण उपलब्ध कराने चाहिए जो हर समय मौजूद हों। विशिष्ट विषयों पर हस्तपुस्तिका प्रदान किए जाने चाहिए ताकि उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट पर विशिष्ट जानकारी खोजने में सुविधा हो। निरंतर प्रतिक्रिया प्राप्त कर सेवाओं में सुधार किया जाना चाहिए

### भविष्य के अनुसंधान:

- वर्तमान में चैटजीपीटी, जेमिनी और अन्य एआई-संचालित उपकरणों ने सूचना खोजने के पारंपरिक तरीकों को परिवर्तित कर दिया है। भविष्य में इस पर शोध की आवश्यकता है कि ये उपकरण शोधार्थियों की 'आलोचनात्मक सोच' और सूचना की गहराई को कैसे प्रभावित कर रहे हैं।
- डिजिटल युग में अत्यधिक सूचना की उपलब्धता से 'सूचना चिंता' पैदा होती है। भविष्य के शोध में इस तथ्य का विश्लेषण किया जाना चाहिए कि 'संज्ञानात्मक भार' और 'डिजिटल तनाव' छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और निर्णय लेने की क्षमता को कैसे प्रभावित करते हैं।
- अधिकांश शोध शहरी विश्वविद्यालयों पर केंद्रित हैं। भविष्य में ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों के उच्च शिक्षा संस्थानों में इंटरनेट की सीमित उपलब्धता और वहां के छात्रों के सूचना व्यवहार के बीच तुलनात्मक अध्ययन की अत्यधिक आवश्यकता है।
- विद्यार्थियों का सूचना व्यवहार समय के साथ बदलता रहता है। भविष्य में अनुदैर्घ्य शोध की आवश्यकता है, जिनमें एक ही समूह के विद्यार्थियों के व्यवहार का अध्ययन स्नातक से पीएचडी स्तर तक किया जाए, जिससे उनके कौशल विकास के चरणों को समझा जा सके।
- आज के छात्र लैपटॉप से अधिक स्मार्टफोन का उपयोग कर रहे हैं। भविष्य में शोध का केंद्र यह होना चाहिए कि 'मोबाइल-फ्रेंडली' पुस्तकालय इंटरफेस और मोबाइल एप्स सूचना तक पहुंच और उसके उपयोग को कैसे सुगम बना सकते हैं।
- 'फेक न्यूज' और 'प्रीडेटरी जर्नल्स' के दौर में छात्र सूचना की सत्यता को कैसे परखते हैं, इसके लिए नए व्यवहार मॉडल विकसित करने की आवश्यकता है, जो विशेष रूप से डिजिटल साक्षरता और नैतिक उपयोग पर आधारित हों।



- विज्ञान, मानविकी और सामाजिक विज्ञान के छात्रों की सूचना आवश्यकताएं भिन्न होती हैं। भविष्य में इन विषयों के बीच बदलते डिजिटल रुझानों का विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

## संदर्भ सूची

1. अहमद, एम. बी., मोख्तर, डब्ल्यू. एन. एच. डब्ल्यू., एवं बहारुद्दीन, एम. एफ. (2025)। अंडरग्रेजुएट विद्यार्थियों में सूचना प्राप्ति व्यवहार एवं इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों के उपयोग: एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा। *जर्नल ऑफ इन्फॉर्मेशन एंड नॉलेज मैनेजमेंट*, 15 (विशेषांक 2)।
2. एनकोमो, एन. (2009)। जुलुलैंड विश्वविद्यालय एवं डरबन यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी में विद्यार्थियों एवं स्टाफ के वेब सूचना प्राप्ति व्यवहार का तुलनात्मक विश्लेषण (मास्टर्स शोध प्रबंध)।
3. ऑर्लु, ए. डी. (2016)। मास्टर स्तर के विद्यार्थियों का सूचना प्राप्ति व्यवहार: भावनात्मक एवं व्यवहारिक आयाम। *लाइब्रेरी फिलॉसफी एंड प्रैक्टिस (ई-जर्नल)*, 1387।
4. कनुंगो, एन. टी. (2007)। सामाजिक वैज्ञानिकों के विद्वत्तापूर्ण संचार में इंटरनेट का उपयोग: इग्नू का एक प्रकरण अध्ययन। *एनाल्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन स्टडीज*, 54, 7–18।
5. कालबांडे, डी. टी. (2015)। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के शोधार्थियों का सूचना प्राप्ति व्यवहार। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ डिजिटल लाइब्रेरी सर्विसेज*।
6. कासारिन, एच. डी. सी. एस., एवं ओलिवेरा, ई. एस. डी. (2012)। शैक्षणिक सूचना का उपयोग: शिक्षा के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का सूचना व्यवहार। *एनकोट्रोस बिब्लिओ: रेविस्ता इलेक्ट्रॉनिका डी बिब्लिओटेकोनोमिया ई सियेंसिया दा इन्फॉर्मासाओ*, 17 (विशेषांक 1), 169–187।
7. कुमार, एस., एवं कुमार, जे. (2023)। डिजिटल परिवेश में विश्वविद्यालय के स्नातक विद्यार्थियों की जागरूकता एवं सूचना प्राप्ति व्यवहार: एक व्यवस्थित समीक्षा।
8. कुमारी, के., एवं शर्मा, एस. (2021)। शैक्षणिक पुस्तकालयों के उपयोगकर्ताओं का सूचना प्राप्ति व्यवहार: साहित्य की एक समालोचनात्मक समीक्षा। *DESIDOC जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी*, 41(6), 469–475।
9. खरे, एस. के., थापा, एन., एवं साहू, के. सी. (2007)। सूचना स्रोत के रूप में इंटरनेट: पीएच.डी. शोधार्थियों का एक सर्वेक्षण। *एनाल्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन स्टडीज*, 54, 201–206।



10. गुणरत्ना, एम. (2024)। उच्च शिक्षा संस्थानों में भौतिक एवं डिजिटल पुस्तकालय सुविधाओं के प्रति विद्यार्थियों की संतुष्टि। *एनाल्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन स्टडीज*, 71(2), 190–199।
11. ग्रिगिच, आई. एच., एवं मियोचिच, पी. (2012)। सूचना स्रोतों की खोज: इलेक्ट्रॉनिक परिवेश में विद्यार्थियों का व्यवहार। *समर स्कूल इन यूजर स्टडीज की कार्यवाही*।
12. जॉर्ज, सी., ब्राइट, ए., हर्लबर्ट, टी., लिंक, ई. सी., सेंट क्लेयर, जी., एवं स्टीन, जे. (2006)। विद्वत्तापूर्ण सूचना का उपयोग: स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का सूचना प्राप्ति व्यवहार। *इन्फॉर्मेशन रिसर्च*, 11(4)।
13. डाहलक्विस्ट, सी. (2021)। शिक्षक-प्रशिक्षु विद्यार्थियों का सूचना प्राप्ति व्यवहार: मात्रात्मक अध्ययनों की एक व्यवस्थित समीक्षा। *एजुकेशन फॉर इन्फॉर्मेशन*, 37, 259–285।
14. नदज़िर, एम. एम., वहाब, ए. ए., एवं ओथमान, एन. (2015)। स्नातक विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ एवं सूचना प्राप्ति व्यवहार: एक प्रारंभिक अध्ययन। *जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड वोकेशनल रिसर्च*, 6(2), 48–54।
15. नारायण, जी. जे. (1984)। सूचना: इसकी भूमिका एवं प्रबंधन। *एनाल्स ऑफ लाइब्रेरी साइंस एंड डॉक्यूमेंटेशन*, 31(1–2), 27–31।
16. निकम, के., एवं प्रमोदिनी, बी. (2007)। मैसूर विश्वविद्यालय के शैक्षणिक समुदाय द्वारा ई-जर्नल्स एवं डेटाबेस का उपयोग: एक सर्वेक्षण। *एनाल्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन स्टडीज*, 54, 19–22।
17. न्वोने, एस. ए., एवं मुतुला, एस. एम. (2019)। विभिन्न विषयों में प्रोफेसर समुदाय के सूचना व्यवहार पर साहित्य समीक्षा। *लाइब्रेरी फिलॉसफी एंड प्रैक्टिस (ई-जर्नल)*, 2843।
18. पर्वतम्मा, एन., एवं पत्त, डी. (2013)। प्रबंधन संस्थानों के विद्यार्थियों में डिजिटल साक्षरता: दावणगेरे जिला, कर्नाटक का अध्ययन। *एनाल्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन स्टडीज*, 60, 159–166।
19. पवार, एम., एवं खरे, आर. के. (2026)। पुस्तकालयों में डिजिटल साक्षरता का सूचना प्राप्ति व्यवहार एवं उपयोगकर्ता संतुष्टि पर प्रभाव: एक व्यवस्थित समीक्षा। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च एंड मल्टीडिसिप्लिनरी ट्रेंड्स*, 3(1)।
20. प्वाडुरा, जे. ए., प्लॉकी, एफ. डी., एवं येबोवा, एफ. ए. (2018)। नब्रोंगो परिसर के स्नातक विद्यार्थियों का सूचना प्राप्ति व्यवहार। *लाइब्रेरी फिलॉसफी एंड प्रैक्टिस (ई-जर्नल)*, 1742।
21. फातिमा, एन., एवं अहमद, एन. (2008)। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के अजमल खान तिब्बिया कॉलेज के विद्यार्थियों का सूचना प्राप्ति व्यवहार: एक सर्वेक्षण। *एनाल्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन स्टडीज*, 55, 141–144।



22. बिरादर, बी. एस., कुमार, पी. डी., एवं महेश, वाई. (2009)। कृषि विज्ञान महाविद्यालय, शिमोगा के पुस्तकालय में सूचना स्रोतों एवं सेवाओं का उपयोग: एक प्रकरण अध्ययन। *एनाल्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन स्टडीज*, 56, 63–68।
23. बिलावर, पी. बी., एवं पुजार, एस. एम. (2016)। विश्वविद्यालय शिक्षकों के सूचना प्राप्ति व्यवहार पर ई-सूचना साक्षरता का प्रभाव। *एनाल्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन स्टडीज*, 63, 176–181।
24. मंजुनाथा, के., एवं शिवलिंगैया, डी. (2003)। पुस्तकालयों में सूचना तक पहुँचा। *एनाल्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन स्टडीज*, 50(2), 85–90।
25. यादव, एन. एस., एवं सिंह, डी. (2025)। 21वीं सदी में सूचना प्राप्ति व्यवहार के मॉडल: सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक विकास की समालोचनात्मक समीक्षा। *इंटरनेशनल जर्नल ऑन साइंस एंड टेक्नोलॉजी*।
26. रुबिनिच, डी. (2014)। विश्वविद्यालय विद्यार्थियों का सूचना व्यवहार: साहित्य समीक्षा। *लिबेलारियम*, 7(1), 105–118।
27. लाकोविच, डी. (2014)। विद्यार्थियों का सूचना व्यवहार एवं शैक्षणिक पुस्तकालय की भूमिका। *लिबेलारियम*, 7(1), 119–139।
28. विल्सन, टी. डी. (2000)। मानव सूचना व्यवहार। *इन्फॉर्मिंग साइंस*, 3(2)।
29. शुहिदान, एस. एम., एवं अन्य। (2020)। उच्च शिक्षा में मिलेनियल विद्यार्थियों का सूचना प्राप्ति व्यवहार। *सोशल एंड मैनेजमेंट रिसर्च जर्नल*, 17(1), 1–16।
30. श्यूमेई, जी. (2010)। डिजिटल युग में सूचना प्राप्ति व्यवहार: शैक्षणिक शोधकर्ताओं का बहु-विषयी अध्ययन। *कॉलेज एंड रिसर्च लाइब्रेरीज*।
31. संथारूबन, एस., एवं प्रेमदासा, पी. जी. (2015)। समस्या-आधारित अधिगम हेतु सूचना साक्षरता मॉडल का विकास। *एनाल्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन स्टडीज*, 62, 138–144।
32. सतीजा, एम. पी. (2013)। सूचना: प्रकृति, महत्व एवं कार्य। *एनाल्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन स्टडीज*, 60, 128–133।
33. स्पेजी, वी. (2016)। क्या डॉक्टरल विद्यार्थियों का सूचना प्राप्ति व्यवहार बदल रहा है?: साहित्य समीक्षा (2010–2015)।
34. हनीफा, के. एम., एवं जॉर्ज, एस. (2010)। कालीकट विश्वविद्यालय के डॉक्टरल विद्यार्थियों के वेब-आधारित सूचना पुनर्प्राप्ति पैटर्न। *एनाल्स ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन स्टडीज*, 57, 394–402।